**Indian J. Soc. & Pol. 05( I ):2018:93-96 Special Issue** **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
**UGC List No. 47956** **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

# मनरेगा और ग्रामीण परिवर्तन : जनपद सीतापुर का अध्ययन

**रजनीकान्त श्रीवास्तव[1a]**
[a]सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,आर0एम0पी0 (पी0जी0) कालेज, सीतापुर,उ0प्र0, भारत

**ABSTRACT**

***मनरेगा का उद्देश्य भारत में न सिर्फ ग्रामीणों की आय में बृद्धि करना बल्कि उनके काम करने के अधिकार को कानूनी रूप प्रदान करना है। यह एक बहु उद्देशीय योजना है, जो एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर हो रहे पलायन को रोकने में प्रभावी होगी वही ग्रामीणों को अपने ही गांव में कार्य दिलाने, उनकी आय में वृद्धि करने, एवं गांवो में आधारभूत सुविधाओं के विकास और ग्रामीण सुन्दरीकरण में सहायक होगी।***

***KEYWORDS:*** *ग्रामीण परिवर्तन, ग्रामीण विकास योजनायें, बेरोजगारी उन्मूलन, रोजगार गारंटी*

25 अगस्त 2005 को विधान द्वारा अधिनियमित राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम का नामकरण 2 अक्टूबर 2009 को महात्मा गांधी के नाम से महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार अधिनियम किया गया। 02 फरवरी 2006 में इसे 200 जिले में और 01 अप्रैल 2008 से इसे भारत के सभी जिलो में लागू कर दिया गया। इस योजना में एक वित्तीय वर्ष में एक ग्रामीण परिवार के वयस्क सदस्यों को 100 दिन रोजगार प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त है। योजना के लागू होने से अब तक इसके समर्थन और विपक्ष में बुद्धिजीवियों द्वारा अलग–अलग प्रकार से प्रतिक्रियाएँ दी गई है। उषा रानी त्यागी एवं आहूजा, दुष्यंत चौहान, सोनिया चौधरी ने अपने शोध Impact of MGNREGA on Rural employment and Emigration : A Study in Agriculturally- back ward and agriculturally advanced district of Haryana में करनाल (कृषि में अग्रणी) तथा मेवाती (कृषि में पिछड़ा) जिलो से 60–60 परिवारों का चयन करके उनकी आय रोजगार, सुरक्षा, कर्ज, भुगतान जैसे विषयों पर मनरेगा के प्रभावो का विश्लेषण किया है। शोध के परिणाम बताते है कि मनरेगा द्वारा रोजगार के अवसर के बावजूद नगरों में उच्च मजदूरी के लालच में ग्रामीणों का पलायन जारी है। शोध से यह भी ज्ञात हुआ कि बडी भूमियों, पशुधन के स्वामी ग्रामीणों की मनरेगा कार्यो में अधिक रूचि नही है।

डा0 सुधीर कुमार एवं शिवानी वर्मा डी0एन0 कालेज, मेरठ ने अपने शोध लेख MGNREGA: A Step towards Ruler Development (2014) मनरेगा में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद सीतापुर में ग्रामीणों के जीवन पर मनरेगा के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। जनपद सीतापुर उत्तर प्रदेश के मध्य में लखनऊ मण्डल का एक भाग है जो लखनऊ से उत्तर में $27^0$ 6″ व $27^0$ 54″ अंक्षाश तथा पूर्व में $80^0$ 18″ व $81^0$ 24″ देशान्तर के मध्य स्थित है। सीतापुर की अधिकाश जनसंख्या गांवों में निवास करती है और भोगौलिक दृष्टि से इसकी गणना तराई क्षेत्र मे होती है।

शोध पत्र में दो ग्रामीण वर्गो के विचारों का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गये है। एक वर्ग ऐसे उत्तरदाताओं का है जिन्होने एक वित्तीय वर्ष में मनरेगा के अन्तर्गत अधिकतम कार्य किया है। दूसरे वर्ग में वह उत्तरदाता है जिन्होने मनरेगा के अन्तर्गत बिल्कुल कार्य नही किये है। शोध पत्र निम्न प्रश्नों पर क्रेन्द्रित है:

1. जाब कार्ड बनवाने, कार्य प्राप्त करने और भुगतान के बारे में लोगो की क्या राय है?
2. गॉव के विकास और सुन्दरीकरण पर दोनो वर्गो की क्या राय है?
3. गॉव में मनरेगा से हो रही आय के क्या दुष्प्रभाव हुए है?
4. आर्थिक सशक्तिकरण में मनरेगा की क्या भूमिका रही है?

**शोध प्रविधि:–**

यह शोध अनुभव मूलक है और सर्वेक्षण की पद्धति पर आधरित है। शोध के लिए जनपद सीतापुर की पॉच तहसीलो– सीतापुर, महोली, मिश्रिख, महमूदाबाद, और लहरपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक तहसील से दस परिवारों का चयन दैव निदर्शन प्रणाली

**सारणी–1 (उत्तरदाताओं की स्थिति)**

| क्र0सं0 | तहसील | योग | लिंग | | धर्म | | व्यवसाय | | | कार्य की स्थिति | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | पु0 | स्त्री | हिन्दू | अन्य | कृषि | स्वयं का | श्रमिक | अधिकतम कार्य | न्यूनतम कार्य |
| 1 | सीतापुर | 10 | 5 | 5 | 8 | 2 | 3 | 0 | 7 | 6 | 4 |
| 2 | महोली | 10 | 5 | 5 | 8 | 2 | 3 | 0 | 7 | 4 | 6 |
| 3 | लहरपुर | 10 | 5 | 5 | 6 | 4 | 2 | 1 | 7 | 6 | 4 |
| 4 | मिश्रिख | 10 | 5 | 5 | 10 | 0 | 3 | 2 | 5 | 5 | 5 |
| 5 | महमूदाबाद | 10 | 5 | 5 | 8 | 2 | 3 | 1 | 6 | 4 | 6 |
| | | 50 | 25 | 25 | 40 | 10 | 14 | 4 | 32 | 25 | 25 |

*1: Corresponding Author*

द्वारा किया गया। प्रत्येक तहसील से चुने गये 10 परिवारों में पॉच ऐसे परिवार है जिन्होने विगत वित्तीय वर्ष में मनरेगा में अधिकतम कार्य प्राप्त किया है जबकि शेष 5 परिवारों का कार्य लगभग नही के बराबर है। इस प्रकार दोनो वर्गो के 25–25 परिवारों से प्रश्नावली के द्वारा मनरेगा के प्रभावों संबंधी प्राथमिक सूचनाओं का संकलन और वर्गीकरण करके तथ्यों का सांख्यिकी द्वारा वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाले गये है।

सारणी से स्पष्ट है कि प्रत्येक तहसील से 10 परिवारों का चयन किया गया है जिनमें 5 परिवारों में उत्तरदाता महिलाएँ है और शेष 5 में पुरूष उत्तरदाता है, इस प्रकार सर्वेक्षण मे 25 पुरूष और 25 महिला उत्तरदाता है। सारणी से यह भी स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत उत्तरदाता हिन्दू धर्म के है और 20 प्रतिशत अन्य धर्म के। उत्तरदाताओं में 64 प्रतिशत श्रमिक वर्ग से है जबकि 28 प्रतिशत कृषक वर्ग से है। 8 प्रतिशत उत्तरदाता निजी व्यवसायरत है। 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने मनरेगा का अधिकतम कार्य प्राप्त किया है जबकि 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने न के बराबर कार्य किया है।

**सारणी –2 जाब कार्ड, कार्य स्थिति एवं भुगतान पर दृष्टिकोण**

| क्रम | चर | राय | अधिकतम कार्य वर्ग | % | न्यूनतम कार्य वर्ग | % | योग | % | Chi -Sq |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | जाब कार्ड बनवाने में प्रधान की मर्जी सर्वोपरि है? | Y | 5 | 20 | 22 | 88 | 27 | 54 | .000** |
| | | N | 20 | 80 | 3 | 12 | 23 | 46 | |
| 2 | कार्य दिलवाना पूर्णता प्रधान की इच्छा पर है? | Y | 0 | 0 | 20 | 80 | 20 | 40 | .000** |
| | | N | 25 | 100 | 5 | 20 | 30 | 60 | |
| 3 | भुगतान प्राप्त होना ग्राम प्रधान की इच्छा पर है? | Y | 4 | 16 | 20 | 80 | 24 | 48 | .000** |
| | | N | 21 | 84 | 5 | 20 | 26 | 52 | |

Y=हॉ, N=नही, ** → Significant at 1 % level

*नोट* : →प्रत्येक वर्ग में उत्तरदाताओं द्वारा चयनित विकल्प का प्रतिशत

सारणी से यह स्पष्ट है कि 54 प्रतिशत परिवार यह मानते है कि जाब कार्ड का बनना ग्राम प्रधान की मर्जी पर निर्भर है। जबकि 46 प्रतिशत उत्तरदाता इससे असहमत है। अधिकतम कार्य करने वाले वर्ग में 80 प्रतिशत श्रमिक इस बात से असहमत है जबकि कार्य न करने वाले वर्ग में 88 प्रतिशत श्रमिक मानते है कि जाब कार्ड का बनना प्रधान की इच्छा पर निर्भर है। शायद इन लोगों का जाब कार्ड प्रधान के कारण ही नही बन पाया प्रतीत होता है, इसकी वजह से इनका मनरेगा मे कार्य भी प्राप्त नही हुआ होगा। सारणी से साफ देखा जा सकता है कि काम न पाने वाले वर्ग के 80: उत्तरदाता मान रहे है कि मनरेगा में कार्य मिलना भी प्रधान की मर्जी पर निर्भर है। शायद यही कारण है कि जिन लोगो में अधिकतम कार्य प्राप्त किया है, उनमें एक भी व्यक्ति प्रधान को इसके लिए उत्तरदायी नही मानता । दोनो वर्ग के मत परस्पर विपरीत है जो निश्चय ही ग्राम प्रधान की भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लगाते है।

**सारणी –3 मनरेगा द्वारा गांव के बदलाव और विकास पर दृष्टिकोण**

| क्रम | चर | राय | अधिकतम कार्य वर्ग | % | न्यूनतम कार्य वर्ग | % | योग | % | Chi -Sq |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | सड़को की स्थिति में सुधार? | Y | 8 | 32 | 3 | 12 | 11 | 22 | .085* |
| | | N | 17 | 68 | 22 | 88 | 39 | 78 | |
| 5 | गांव की स्वच्छता में वृद्धि? | Y | 4 | 16 | 2 | 8 | 6 | 12 | .334 |
| | | N | 21 | 84 | 23 | 92 | 44 | 88 | |
| 6 | वृक्षारोपण में वृद्धि? | Y | 1 | 4 | 0 | 0 | 1 | 2 | .500 |
| | | N | 24 | 96 | 25 | 100 | 49 | 98 | |
| 7 | जल संरक्षण के उपायो का संवृद्धन | Y | 21 | 84 | 15 | 60 | 36 | 72 | .057* |
| | | N | 4 | 16 | 10 | 40 | 14 | 28 | |

Y=हॉ, N=नही, * → Significant at 10 % level *नोट* : →प्रत्येक वर्ग में उत्तरदाताओं द्वारा चयनित विकल्प का प्रतिषत

इस सारणी में गांव मे मनरेगा के तहत हुए विकास और सुन्दरीकरण के बारे में प्राप्त जानकारी के विश्लेषण से पता चलता है कि दोनो ही वर्ग के उत्तरदाताओं का बहुमत स्वीकार कर रहा है कि गांव में सड़को की स्थिति में सुधार नही हुआ है। 78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सड़कों की स्थिति में सुधार नही माना है। इसी प्रकार कुल मतदाताओं का 88 प्रतिशत मानते है कि मनरेगा कार्यो से गांव मे कोई स्वच्छता नही आयी है। यह देखना भी दु:खद है कि कुल उत्तरदाताओं के 98 प्रतिशत का मत है कि गांव में मनरेगा के तहत वृक्षारोपण कार्य भी नही हुए है। एक मात्र सकारात्मक पक्ष जिसमें मनरेगा का प्रभाव दिखाई देता है वह गांव में जल संरक्षण के उपायो से सम्बन्धित है। 72 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि मनरेगा के तहत हुए कार्यो से जल संरक्षण की व्यवस्थाओं में सुधार हुआ है। विश्लेषण से जो रोचक तथ्य सामने आता है कि जिन लोगो ने मनरेगा में अधिकतम कार्य किया है वे भी यह मानते है कि मनरेगा के कार्य से गांवो में विकास या सुन्दरीकरण नही हो पाया है, जो निश्चत ही योजना के लिए अच्छा संकेत नही है और जनता के धन से संचालित हो रही इस योजना में अरबों रूपयों के व्यय पर प्रश्न चिन्ह लगाता है।

| सारणी –4 मनरेगा की आय के गांवो पर दुष्प्रभाव सम्बन्धी दृष्टिकोण | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रम | चर | राय | अधिकतम कार्य वर्ग | % | न्यूनतम कार्य वर्ग | % | योग | % | Chi Sq |
| 8 | तम्बाकू के सेवन व धूमपान में वृद्धि? | Y | 20 | 80 | 18 | 72 | 38 | 76 | .371 |
| | | N | 5 | 20 | 7 | 28 | 12 | 24 | |
| 9 | शराब के सेवन में वृद्धि? | Y | 16 | 64 | 22 | 88 | 38 | 76 | .048* |
| | | N | 9 | 36 | 3 | 12 | 12 | 24 | |
| 10 | जुँए की प्रवृत्ति को बढ़वा? | Y | 18 | 72 | 24 | 96 | 42 | 84 | .024* |
| | | N | 7 | 28 | 1 | 4 | 8 | 16 | |
| 11 | मादक पदार्थो के सेवन मे वृद्धि? | Y | 6 | 24 | 18 | 72 | 24 | 48 | .001** |
| | | N | 19 | 76 | 7 | 28 | 26 | 52 | |

Y=हॉ, N=नही, * → Significant at 10 % level ** → Significant at 1 % level

*नोट* : →प्रत्येक वर्ग में उत्तरदाताओं द्वारा चयनित विकल्प का प्रतिशत

इस सारणी से प्राप्त जानकारी के विश्लेषण से पता चलता है कि मनरेगा से बढ़ती आय ने गांवो में दुष्प्रवृत्तियों को किस प्रकार बढ़ावा दिया है। 76 प्रतिशत उत्तरदाता मान रहे है कि गावो में विगत वर्षो में मदिरा पान बढ़ा है रोचक तथ्य यह है कि जो लोग मनरेगा में अधिकतम कार्य कर रहे है उनमें से 64 प्रतिशत लोगों का मानना है कि मनरेगा से हुई आय ने गांवो में मदिरा पान को बढ़ावा दिया है वही काम न करने वाले 88ः लोग भी मान रहे है कि गांवों मे विगत वर्षो में मदिरा पान बढ़ा है।

यह निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है कि जो लोग मनरेगा में कार्य नही कर रहे है वे अपने को खाली समय में शराब जैसी प्रवृत्तियों की ओर मोड़ रहे है। दोनो ही वर्ग के उत्तरदाताओं का मानना है कि गांवो में जुएँ का खेला जाना बढ़ा है। कार्य करने वालों में 72 प्रतिशत व न करने वालों में 96 प्रतिशत लोग मानते है कि जुएँ की प्रवृत्ति में बृद्धि हुई है। सबसे चिंताजनक तथ्य यह कि कि जो लोग कार्य नही कर रहे है उनमें 72 प्रतिशत लोग मान रहे है कि गांव में नशीले पदार्थो का सेवन बढ़ा है। समाज और सरकार के लिए यह चिंताजनक है। कार्य करने वाले लोगो के मात्र 24 प्रतिशत ही मानते है कि उनके परिवारों में नशीले पदार्थो का सेवन बढ़ा है।

| सारणी –5 मनरेगा द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण पर दृष्टिकोण | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रम | चर | राय | अधिकतम कार्य वर्ग | % | न्यूनतम कार्य वर्ग | % | योग | % | Chi -Sq |
| 12 | बचत में वृद्धि? | Y | 7 | 28 | 0 | 0 | 7 | 14 | .005** |
| | | N | 18 | 72 | 25 | 100 | 43 | 86 | |
| 13 | छोटे कर्जो से मुक्ति? | Y | 15 | 60 | 0 | 0 | 15 | 30 | .000** |
| | | N | 10 | 40 | 25 | 100 | 35 | 70 | |

Y=हॉ, N=नही,* → Significant at 10 % level ** Significant at 1 % level

*नोट* : →प्रत्येक वर्ग में उत्तरदाताओं द्वारा चयनित विकल्प का प्रतिशत

इस सारणी में परिणाम एक पक्षीय किन्तु बहुत ही स्पष्ट है कि अधिकतम कार्य पक्ष के 72 प्रतिशत एंव कार्य न करने वाले वर्ग के शतप्रतिशत लोग इस बात से असहमत है कि मनरेगा की आय ने उनकी बचत क्षमता को बढ़ाया है। इसका कारण सम्भवतः ग्रामीणों की आय से अधिक व्यय और बढ़ती हुई महगाई हो सकती है। यद्यपि कार्य न करने वालों की तुलना में अधिकतम कार्य वर्ग के 28ः लोग अपनी बचत बढ़ने की बात से सहमत है। तथ्यों के विश्लेषण से ये सकारात्मक निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतम कार्य वर्ग के 60ः लोगो ने माना है कि वे मनरेगा की आय के कारण छोटे–छोटे कर्जो से उभरने में सफल हुए है। जबकि कार्य न करने वालो में ऐसा मानने वालो का प्रतिशत शून्य है।

## निष्कर्ष

1. मनरेगा में ग्राम प्रधान बहुत ही प्रभावी भूमिका में है। जाबकार्ड बनवाने और कार्य दिलाने में उनकी इच्छा सर्वोपरि है और शायद उनके पक्ष के लोग ही अधिक लाभान्वित है।
2. शोध से ज्ञात हुआ कि मनरेगा कार्यो से गांवो की सड़को और स्वच्छता में कोई प्रगति नही हुई है और न ही वृक्षारोपण को बढ़ावा मिला है। मनरेगा कार्य मुख्यतः कुओ और तालाबों के निर्माण तक ही सीमित रह गए है।
3. मनरेगा से हुई आमदनी ने एक ओर गांव में शराब और जुओ की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है वही दूसरी ओर कार्य न पाने वाले लोगो में निराशा और उनका खाली रहना उन्हे शराब, जुए के साथ–साथ उन्हे नशीले पदार्थो के सेवन की ओर भी प्रवृत्त कर रहा है।
4. मनरेगा की आय ने लोगो को छोटे ऋणों से मुक्ति दिलाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। किन्तु मनरेगा की आय इतनी भी अधिक नही है कि लोगो की बचत में प्रभावी वृद्धि हो सके।

**सुझावः–**

1. जब कार्ड बनाने का काम छण्ळण्व्ण अथवा किसी संस्था के जिम्मे किया जा सकता है जिससे इसमें प्रधानों का वर्चस्व समाप्त हो सके।
2. लोगो को स्वेच्छा से किन्तु अनिवार्यतः मनरेगा में काम करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए कि ताकि सभी ग्रामीणों के लिए रोजगार सुनिश्चित हो सके।
3. मनरेगा में विभिन्न प्रकार के कार्यो का कराया जाना सुनिष्चित हो ताकि यह योजना केवल तालाबों और जलाशयों खुदाई तक ही यह सीमित न रहे।
4. लोगो को बचत योजनाओं और आर्थिक नियोजन के बारे में जानकारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
5. गांव में अशिक्षा वहॉ फैलने वाली दुष्प्रवृत्तियों के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। अतः प्रौढ़ वर्ग के लोगो को भी नशाखोरी, जुऍं और मादक पदार्थो के दुष्प्रभावों के संबंध में शिक्षित किया जाना चाहिए।

**संदर्भ**

कदम, राजेश, सुमित भंडारी एवं गोदावरी पवार, (2015) *महात्मा गांधी नेशनल रूरल इंम्प्लायमेन्ट गारंण्टी एक्ट* लैप लैम्बर्ड एकेडमिक पब्लिशिंग डाट काम ।

पुरोहित, अशोक (2014), *मनरेगा और ग्रामीण विकास* नई दिल्ली, डोमिनेन्ट पब्लिशर्स

सीतापुर विकास पुस्तिका 2014, *जिला अर्थ एवं सॉख्यिकी विभाग।*

नरेप्पा नागराज एवं बी0जी0 हरीश (2012) *ऐन इकोनोमिक इम्पैक्ट एनालिशिस आफ मनरेगा* लैप लैम्बर्ड एकेडमिक पब्लिशिंग डाट काम